शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

धर्मसंस्था और शासनसंस्था से छुटकारा हो

विनोबा

आज कुल दुनिया में दो प्रकार की संस्थाएं बहुत मजबूत बनी हैं। एक है धर्मसंस्था और दूसरी है शासनसंस्था। दोनों संस्थाएं लोकसेवा के खयाल से बनायी गयी हैं। समाज को दोनों संस्थाओं की आवश्यकता महसूस हुई और वह आज भी उनका उपयोग कर रहा है। जब ये दोनों संस्थाएं बनीं तब तो समाज को ये बहुत ही जरूरी मालूम हुईं इसलिए तब उनका कुछ उपयोग भी हुआ।

लेकिन अब ऐसी हालत हो गयी है कि इन दोनों से छुटकारा पाना समाज के लिए जरूरी हो गया है। मैं यह नहीं कहता कि धर्म से छुटकारा पाने की जरूरत है बल्कि यह कह रहा हूं कि धर्मसंस्था से छुटकारा पाने की जरूरत है। मैं यह भी नहीं कहता कि लोगों का कुछ इंतजाम, समाजसेवा की योजना न हो, बल्कि मैं यही कह रहा हूं कि सेवा के नाम पर जो शासन चलता है, उससे छुटकारा पाना जरूरी है। जितना-जितना सोचता हूं, उतना ही उतना मेरा यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि ये दोनों संस्थाएं अच्छे उद्देश्य से शुरू हुईं और अब तक उन उद्देश्यों की पूर्ति हो गयी, इसलिए अब उनके जारी रहने में लाभ होने के बदले नुकसान ही होगा।

जो धर्म पर श्रद्धा नहीं रखते, वे तो रखते ही नहीं, पर जो रखते हैं, उनकी श्रद्धा भी निर्वीय बन गयी है। उन्होंने धर्मकार्य चंद लोगों को सौंपकर अपने को उससे मुक्त रखा और धर्म को समाप्त कर दिया।

मान लीजिए, मैंने सोने की जिम्मेदारी एक मनुष्य पर सौंपी और उसे इसके लिए तनख्वाह भी दी। वह बहुत अच्छी तरह से दस-दस घंटे सोता है और अपनी जिम्मेवारी अच्छी तरह से निभाता है, तो क्या मेरे नींद न लेने से चलेगा ? उसे सोने की जिम्मेदारी सौंपकर मुझे क्या लाभ होगा ? जैसे अपनी नींद मुझे लेनी होगी, उसकी जिम्मेदारी मैं दूसरों पर नहीं सौंप सकता, वैसे ही मेरे धर्मकार्य का जिम्मा मुझ पर ही है। वह मैं किसी पर भी सौंप नहीं सकता।

धर्म की जिम्मेदारी हमने जिन पर सौंपी, उन्होंने उसे अच्छी तरह नहीं निभाया, यह मेरी पहली शिकायत है। लेकिन वे उसे अच्छी तरह निभाते, तो भी वह गलत काम है, यह मेरा दूसरा आक्षेप है।

जो धर्मसंस्था की हालत है, वही हालत शासन और समाजसेवा के बारे में हुई है। अगर धर्मकार्य पुजारियों पर और समाजसेवा का कार्य चुने हुए प्रतिनिधियों पर सौंपा, तो आपने अपने ऊपर कौन-सी जिम्मेदारी ली ? आप कहेंगे कि हम खायेंगे, पीयेंगे, सोयेंगे, यही जिम्मेदारी हमने उठायी है। किंतु आपने ऐसी जिम्मेदारी दूसरों पर सौंपी, जिससे आप ठीक तरह से खा-पी भी नहीं सकते। यह शिकायत इसलिए होती है कि आपने जिन्हें काम सौंपा, वे वह काम ठीक तरह से नहीं करते। पर वे वह काम अच्छी तरह करते, तो भी मेरा उस पर आक्षेप है। जो लोग अपना शासन और सेवा का भार चंद प्रतिनिधियों पर सौंपेंगे, धर्म और चिंतन की जिम्मेदी चंद लोगों पर सौंपेंगे, वे बिल्कुल निःसार होंगे, उनके जीवन में कोई प्राणतत्व नहीं रहेगा।

हिंदुस्तान की हालत विशेष है। यहां की जनता में उस प्रकार की जाग्रति नहीं है जैसे इंग्लैंड आदि देशों में है। हमने अपना धर्म और अपनी व्यवस्था काम भी चंद लोगों के हाथों में सौंपा है। दोनों ओर से हम पुरुषार्थहीन बन गये हैं। सर्वोदय-समाज हर व्यक्ति से कहता है कि अपने शासन का इंतजाम तुम खुद करो। अपने धर्म का आचरण तुम खुद करो। तीसरी शक्ति विनोबा साहित्य, खंड 16